= संज्ञा =

☆ संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है — '<u>नाम</u>'।

परिभाषा — जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव का नाम प्रकट होता है, उसे संज्ञा कहते हैं।

जैसे — राम, श्याम, किताब, कलम, सुशील, बुढ़ापा, मित्रता, गरीबी - - - - -

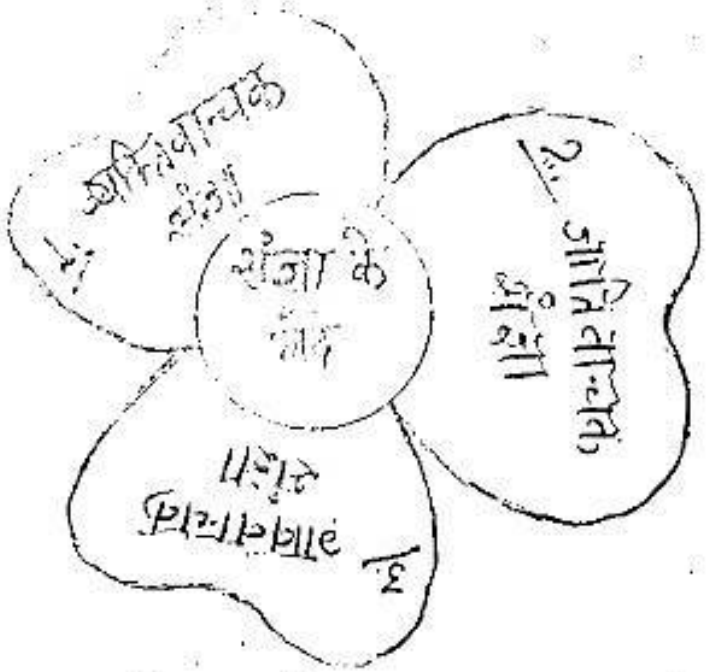

☆ समूहवाचक संज्ञा और द्रव्यवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।

1/ **व्यक्तिवाचक संज्ञा** — जिस संज्ञा शब्द से किसी खास (एक) व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे — सीता, रामायण, पटना

2. जातिवाचक संज्ञा — जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति या वस्तु के सम्पूर्ण जाति का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे — स्त्री, पुरुष, किताब, कलम ----

3. भाववाचक संज्ञा — जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण-दोष, स्वभाव और अवस्था का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे — ईमानदारी, सच्चाई, लड़कपन, गरीबी, बुढ़ापा, मित्रता ----

4. समूहवाचक संज्ञा — जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु के समूह या झुंड का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे — वर्ग, सेना, मेला, शाखा ----

5. द्रव्यवाचक संज्ञा — जिस संज्ञा शब्द से नाप-तौल वाली वस्तु का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे — चावल, गेहूँ, घी, दाल ----

भाववाचक संज्ञा बनाने के नियम

⇒ भाववाचक संज्ञा चार प्रकार के शब्दों से बनती हैं —

(1) जातिवाचक संज्ञा से
(2) सर्वनाम से
(3) विशेषण से
(4) क्रिया से

1. जातिवाचक संज्ञा से —

जातिवाचक संज्ञा		भाववाचक संज्ञा
मनुष्य	—	मनुष्यता
शिशु	—	शैशव
लड़का	—	लड़कपन
बच्चा	—	बचपन
मित्र	—	मित्रता
बूढ़ा	—	बुढ़ापा
नेता	—	नेतृत्व
ठाकुर	—	ठकुराई
चिकित्सक	—	चिकित्सा

2. सर्वनाम से —

सर्वनाम		भाववाचक संज्ञा
आप	—	आपा
अपना	—	अपनापन, अपनत्व
पराया	—	परायापन
मम	—	ममता, ममत्व
सर्व	—	सर्वस्व

3. विशेषण से —

विशेषण	—	भाववाचक संज्ञा
ऊँचा	–	ऊँचाई
अच्छा	–	अच्छाई
एक	–	एकता
कठोर	–	कठोरता
कम	–	कमी
कमजोर	–	कमजोरी
छोटा	–	छुटपन
गरीब	–	गरीबी
गंदा	–	गंदगी
उचित	–	औचित्य
दूर	–	दूरी

4. क्रिया से —

क्रिया	—	भाववाचक संज्ञा
चुनना	–	चुनाव
जलना	–	जलन
खेलना	–	खेल
खोजना	–	खोज
गिरना	–	गिरावट
घबराना	–	घबराहट
लड़ना	–	लड़ाई
दौड़ना	–	दौड़
पहुँचना	–	पहुँच
जीना	–	जीवन

वचन

परिभाषा — जिस शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु के संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

जैसे — लड़का, लड़के, लड़की, लड़कियाँ, छात्र, छात्रगण मित्र, अतिथिगण... आदि।

वचन के भेद

① एकवचन

② बहुवचन

1. एकवचन — जिस शब्द से एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे — लड़का, लता, आँख, गाना, पुस्तक, नदी...

2. बहुवचन — जिस शब्द से एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे — लड़के, लताएँ, आँखें, पुस्तकें, नदियाँ...

✩ एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम —

① आकारांत पुल्लिंग शब्द के 'आ' को 'ए' में बदलकर एकवचन से बहुवचन बनाया जाता है।

जैसे —

एकवचन	बहुवचन
कपड़ा	कपड़े
लड़का	लड़के
घोड़ा	घोड़े
तोता	तोते
शीशा	शीशे

② अकारांत स्त्रीलिंग शब्द के 'अ' को 'एं' में बदलकर एकवचन से बहुवचन बनाया जाता है।

जैसे —

एकवचन	बहुवचन
पुस्तक	पुस्तकें
रात	रातें
बात	बातें
आँख	आँखें

(3) इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'याँ' जोड़कर एकवचन से बहुवचन बनाया जाता है।

जैसे — एकवचन — बहुवचन

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
शक्ति	शक्तियाँ	तिथि	तिथियाँ
नीति	नीतियाँ	रीति	रीतियाँ

(4) ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम 'ई' को ह्रस्व (इ) करके अंत में 'याँ' जोड़कर एकवचन से बहुवचन बनाया जाता है।

जैसे — एकवचन — बहुवचन

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़की	लड़कियाँ	कॉपी	कॉपियाँ
नारी	नारियाँ	नदी	नदियाँ
		टोपी	टोपियाँ

(5) जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'या' होता है, उनमें 'या' पर चन्द्रबिन्दु (ँ) लगाकर एकवचन से बहुवचन बनाया जाता है।

जैसे — एकवचन — बहुवचन

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कुटिया	कुटियाँ	चुहिया	चुहियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ	चिड़िया	चिड़ियाँ
		बुढ़िया	बुढ़ियाँ

(6) आकारांत और उकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर एकवचन से बहुवचन बनाया जाता है।

जैसे — एकवचन — बहुवचन

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
माता	माताएँ	कक्षा	कक्षाएँ
माला	मालाएँ	ऋतु	ऋतुएँ
आत्मा	आत्माएँ	धातु	धातुएँ
कथा	कथाएँ	वस्तु	वस्तुएँ

(7) कुछ शब्दों में 'जन', 'गण' और 'वृंद' जोड़कर एकवचन से बहुवचन बनाया जाता है।

जैसे — एकवचन — बहुवचन

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गुरु	गुरुजन	शिक्षक	शिक्षकगण
मित्र	मित्रगण	बराती	बरातीवृंद
अतिथि	अतिथिगण		

कारक

परिभाषा — कारक का शाब्दिक अर्थ होता है — 'करनेवाला'। क्रिया की उत्पत्ति में जो सहायक होता है, उसे कारक कहते हैं।

जैसे — राम पढ़ता है।
राम किताब पढ़ता है।
चिड़िया डाल पर बैठी है।

☆ कारक के भेद — कारक के आठ भेद होते हैं —

कारक		चिह्न (परसर्ग)
1. कर्ता कारक	-	ने
2. कर्म "	-	को
3. करण "	-	से
4. सम्प्रदान "	-	को, के लिए
5. अपादान "	-	से
6. संबंध "	-	का, के, की
7. अधिकरण "	-	में, पर
8. संबोधन "	-	हे!, अजि!, अरे! ...

(1) कर्ता कारक — जो काम करता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं।
जैसे — तुम सब यहाँ आओ।
राम ने पढ़ा।

(2) कर्म कारक — जिस पर काम का फल (प्रभाव) पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।
जैसे — बालक घर जाते हैं।
उसने बाघ को मारा।

(3) करण कारक — जो क्रिया का माध्यम होता है, उसे करण कारक कहते हैं।
जैसे — वह कलम से लिखता है।
हमसब आँखों से देखते हैं।

(4) सम्प्रदान कारक — जब किसी के लिए कोई वस्तु लायी जाती है या जिसको कोई वस्तु दी जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।
जैसे — राजा भिक्षुक को धन देता है।
वह माता के लिए फल लाती है।

(5) अपादान कारक — जहाँ से कोई वस्तु अलग होती है, उसे अपादान कारक कहते हैं।
जैसे — घड़ा से पानी बहता है।
वह विद्यालय से घर जाता है।

(6) संबंध कारक — जो संज्ञा और सर्वनाम का संबंध दूसरे संज्ञा शब्दों से प्रकट करता है, उसे संबंध कारक कहते हैं।
जैसे — उसकी गाय काली है।
राम के पिता जाते हैं।
राम श्याम का मित्र है।

(7) अधिकरण कारक — जो क्रिया का आधार होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।
जैसे — हमलोग भारत देश में रहते हैं।
चिड़िया डाल पर बैठी है।

(8) संबोधन कारक — जिसे संबोधित अर्थात पुकारा जाता है, उसे संबोधन कारक कहते हैं।
जैसे — हे राम! दया करो।
अरे! आप कैसे हैं?
अजि! मैं ठीक हूँ।